छोटे किसान समृध किसान

सरोज महापात्रा, कार्यकारी निदेशक, प्रदान
राजीव रंजन, इंटीगग्रेटर, प्रदान

सारांश

कृषि हमारे देश की रीढ़ है। 2 हेक्टेयर से कम भूमि वाले लगभग 100 मिलियन छोटे किसान सभी भारतीय किसानों का 83 प्रतिशत प्रतिनिधित्व करते हैं। ये छोटे किसान विभिन्न प्रकार की फसलें उगाते हैं और पूरे भारतीय परिदृश्य में फैले हुए हैं। उनकी उपज देश में खाद्य आपूर्ति का लगभग 70 प्रतिशत है। मध्य भारत के आदिवासी क्षेत्रों में, छोटे और सीमांत किसान कई चुनौतियों का सामना करते हैं जैसे उचित मूल्य पर और सही समय पर गुणवत्तापूर्ण इनपुट की अनुपलब्धता, सिंचाई के आधारभूत ढांचे की कमी, किफायती ऋण, फसल बीमा, बाजार, कटाई के बाद के बुनियादी ढांचे, विस्तार सेवाओं और जुताई, पौधे, छिड़काव आदि जैसी आवश्यक सेवाओं की कमी। संक्षेप में, उत्पादन के कारक छोटे किसान के नियंत्रण से परे हैं। समस्या तब और जटिल हो जाती है जब किसान महिलाएँ, होती हैं, जो ज्यादातर आदिवासी होती हैं, वर्षा आधारित क्षेत्रों में और मुख्यधारा से अलग–थलग इलाकों से होती हैं। उनकी कृषि और गैर–कृषि उत्पादकता देश के औसत से बहुत कम है। उन्हें गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकालने के लिए, सामाजिक और आर्थिक सामूहिकता में सामूहिकता, सामूहिक नेतृत्व वाली योजना, आजीविका विविधीकरण, संपत्ति निर्माण, आय और स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करना और बाजारों और अन्य पारिस्थितिकी प्रणालियों को जोड़ना आवश्यक है। यह लेख मध्य भारत के आदिवासी क्षेत्र में छोटे किसानों को समृद्ध किसानों के रूप में बढ़ावा देने के सबक को पकड़ने पर केंद्रित है। यह अनुभव प्रदान (पीआरएडीएएन) टीमों, नागरिक समाज संगठनों (सी–एस–ओ–) द्वारा किए जा रहे संयुक्त कार्य और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के साथ काम करने से आ रहा है। संदर्भ– चुनौतियाँ और अवसर मध्य भारत के आदिवासी क्षेत्र में, छोटे और सीमांत किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों में से एक कृषि से कम आय है। जलवायु परिवर्तन ने इसमें और जटिलताएँ, जोड़ दी हैं। नतीजतन, युवा अनुमानित आय की तलाश में शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। मध्य भारतीय राज्य के उच्चभूमि क्षेत्रों को अत्यधिक गरीबी से ग्रस्त माना जाता है जहाँ मुख्य रूप से आदिवासी और दलित समुदाय रहते हैं। यद्यपि इन क्षेत्रों में वार्षिक वर्षा 1200–1500 मिमी होती है, फिर भी अधिकांश परिवार वर्षा आधारित खेती पर निर्भर हैं। अपर्याप्त पूंजी निवेश, खराब उत्पादकता, सिंचाई की कमी, अपर्याप्त बाजार पहुंच, विस्तार सेवा, और अनिश्चित जलवायु परिस्थितियों के कारण खेती से होने वाली कुल आय कम और अप्रत्याशित है। चुनौतियों के बाद भी, ये ऊंचे इलाके सभी प्रकार के फलों और सब्जियों को उगाने के लिए अनुकूल तापमान और सापेक्ष आर्द्रता प्रदान करते हैं। इन क्षेत्रों में बागवानी फसलों के उत्पादन क्लस्टर के रूप में उभरने की क्षमता है। इसके अलावा, वन सीमांत क्षेत्रों के कारण, पूरक गतिविधि के रूप में पशुधन पालन को एकीकृत करने से आय में महत्वपूर्ण लाभ हो सकता है। किसान कृषि पर निर्भर हैं और कृषि में उनका बुनियादी रुझान है जो उन्हें कृषि आधारित आजीविका गतिविधियों में संलग्न होने के अपार अवसर प्रदान करता है। इन क्षेत्रों में, राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (एसआरएलएम) और सी,सओ की उपस्थिति विकास एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए कारकों को सुविधाजनक बना रही है। एनआरएलएम ने लगभग हर गाँव को एसएचजी से संतृप्त कर दिया है। एसआरएलएम द्वारा आधारभूत काम किया गया है, जो आजीविका कार्य के लिए उपजाऊ जमीन प्रदान करता है। लखपति दीदी कार्यक्रम और आजीविका के सार्वभौमिकरण ने आजीविका के काम को और बढ़ावा दिया है। अब क्लस्टर लेवल फेडरेशन (सीएलएफ) अपने सदस्यों के लिए आजीविका गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए तैयार हैं।

दृष्टिकोण/रणनीतियाँ

इस स्थिति के जवाब में, निम्नलिखित रणनीतियाँ अपनाई गईं:–

आजीविका में विविधता लानाः कृषि में अनाज, दलहन, तिलहन और बागवानी फसलों के संयोजन को बढ़ावा दिया जाता है। कृषि से परे, बकरी पालन, मुर्गी पालन, वन आधारित आजीविका, उद्यम और कौशल आधारित रोजगार को सदस्यों के साथ बढ़ावा दिया जाता है। समुदायों के साथ योजना बनाई जाती है ताकि अधिकांश परिवार 2–3 आजीविका गतिविधियाँ करें।

सामूहिक नेतृत्व वाली योजनाः गाँव स्तर की योजना पेशेवर या प्रशिक्षित सामुदायिक कैडर द्वारा वीओए एसएचजी या उत्पादक समूहों के साथ मिलकर बनाई जाती है जहाँ परिवार आधारित योजना बनाई जाती है। कृषि योजना के बाद ऋण योजना बनाई जाती है ताकि सदस्य अपनी आजीविका निवेश के लिए धन जुटा सकें। यदि आवश्यक हो तो सदस्यों की कार्यशील पूँजी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बैंक लिंकेज भी किए जाते हैं। फिर कृषि योजनाओं को सी,लएफ स्तर पर एकत्रित किया जाता है। कुछ स्थानों पर, यह अभ्यास कोबो प्लेटफॉर्म पर किया जाता है, जहाँ ऑनलाइन इंडेंट तैयार किया जाता है। इन माँगों को फिर कृषि उद्यमियों (,ई) या किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) के पास भेजा जाता है, जो किसानों के दरवाजे पर गुणवत्तापूर्ण इनपुट प्रदान करते हैं।

सामुदायिक कैडर के माध्यम से विस्तार सेवाएंः स्थायी गतिविधियों में किसान का समर्थन करने के लिए प्रत्येक विषय के लिए कई सामुदायिक कैडर को बढ़ावा दिया जाता है। आम तौर पर, 100–150 किसानों का समर्थन करने के लिए एक सीआरपी को बढ़ावा दिया जाता है। एक ग्रामीण विस्तार मॉडल टिकाऊ कृषि और पशुधन विकास रणनीतियों का अभिन्न अंग है। समुदायों को इन सामुदायिक प्रदाताओं को सेवा शुल्क का भुगतान करने की सुविधा

दी जाती है। यह पशुधन सेवाओं के मामले में हो रहा है जबकि कृषि में ज्ञान निर्माण के लिए पारिश्रमिक प्रवर्तक एजेंसियों से आ रहा है। प्रणाली को टिकाऊ बनाने के लिए, उन्हें एक मूल संस्थान जैसे सी,लएफ या एफपीओ से जोड़ा जाता है जो उनके काम की निगरानी और निगरानी करते हैं। सदस्यों को सेवा, प्रदान करने के लिए एआई को भी बढ़ावा दिया जाता है। एआई संरक्षित खेती के तहत नर्सरी कर रहे हैं और लागत के आधार पर सदस्यों को रोग मुक्त पौधे प्रदान कर रहे हैं। इसी तरह, एआई इनपुट और कृषि मशीनीकरण में भी काम कर रहे हैं।

उत्पादन क्लस्टर को बढ़ावा देनाः नासिक प्याज क्लस्टर और मलीहाबाद आम क्लस्टर जैसे मौजूदा उत्पादन क्लस्टरों से सबक लेते हुए हमने ऐसे क्षेत्रों की भी पहचान की है, जहाँ कुछ फसलों/वस्तुओं को क्लस्टर के रूप में बढ़ावा दिया जा सकता है। फसलों/वस्तुओं का चयन छोटे किसानों की उपयुक्तता, कृषि संबंधी गणना और बाजार के आकर्षण के आधार पर किया जाता है। एक सामान्य क्लस्टर में एक ब्लॉक में 2500–3000 किसान होते हैं, जो एक ही समय में एक ही फसल उगाते हैं। उत्पादन क्लस्टरों को बढ़ावा देने के पीछे का विचार विपणन योग्य अधिशेष प्राप्त करना है। कृषि उत्पादन क्लस्टर (एपीसी) संवर्धन में टीमों को बढ़ावा देने में सहायता करने के लिए एक टूलकिट विकसित की गई है।

आर्थिक संगठनों को बढ़ावा देनाः अधिशेष उत्पादन एफपीओ संवर्धन के लिए एक आधारभूत मानदंड है। जिन स्थानों पर कृषि एक निश्चित स्तर पर पहुँच गई है, जहाँ अधिशेष आ रहा है, वहां एफपीओ को बढ़ावा दिया जा सकता है। हमने 3–4 वर्षों में 85 कृषि एफपीओ और 10 पशुधन एफपीओ को बढ़ावा दिया है। अपने सदस्यों को इनपुट–आउटपुट जैसी सेवा, प्रदान करने के लिए एफपीओ की अत्यधिक आवश्यकता है। इन संस्थानों की अनुपस्थिति में, कृषि कार्यक्रम प्रवर्तक,जेंसी पर निर्भर रहते हैं। योजनाओं की योजना बनाने और उन्हें एकत्र करने के लिए ग्राम स्तर पर पीजी को बढ़ावा दिया जाता है और वे एफपीओ के सदस्यों के लिए जुड़ाव के महत्वपूर्ण नोड हैं। एफपीओ को अपने सदस्यों के साथ जल्दी खराब होने वाली और जल्दी खराब न होने वाली दोनों तरह की फसलों को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि वे पूरे साल बाजार से जुड़े रह सकें और साथ ही वे उच्च–क्रम मूल्य संवर्धन में आगे बढ़ सकें। उदाहरण के लिए, झारखंड में 4 एफपीओ अपने सदस्यों के साथ सरसों की खेती को बढ़ावा दे रहे हैं और उससे तेल बना रहे हैं। कुछ एफपीओ दाल बनाने, बाजरा प्रसंस्करण और चावल बनाने के व्यवसाय में हैं। स्थानीय उद्यमियों को बढ़ावा दिया जाता है जो स्थानीय क्षेत्रों में भी एफपीओ

उत्पाद बेच रहे हैं जैसे कि सरसों के तेल की स्थानीय क्षेत्र में भी बड़ी माँग है लेकिन लोग हमेशा बाजार को बाहरी बाजार के रूप में देखते हैं। सर्कुलर इकोनॉमी या स्थानीय क्षेत्र की अर्थव्यवस्था की अवधारण ा यहाँ मेल खाती है।

बाजार समर्थन बनाना: एफपीओ को बाजार को किसान के दरवाजे के करीब लाने के लिए बढ़ावा दिया जाता है। एफपीओ विभिन्न बाजार चौनलों पर काम कर रहे हैं जैसे कि बड़े खरीदार, मंडियां, खुदरा विपणन और ऑनलाइन ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म। वे संस्थागत खरीदारों और स्टार्टअप से भी जुड़े हुए हैं। आजीविका सहायता के लिए आजीविका अवसंरचना का निर्माण: गांवों में आजीविका योजनाओं या परिसंपत्ति योजनाओं को सम्मिलित करने के लिए ग्राम पंचायत विकास योजना (जीपीडीपी) और ग्राम गरीबी निवारण योजना (वीपीआरपी) को सुगम बनाया गया है। इन सरकारी पहलों के इर्द–गिर्द सामुदायिक सामूहिकता तैयार करना और ग्राम सभा और पंचायतों के साथ जुड़ना इस ग्रामीण कृषि अवसंरचना तक पहुँच प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण कदम हैं। हर साल समुदाय एमजीएनआरईजीएस के सहयोग से जल संचयन टैंक बनाने और फलों के पेड़ लगाने में सक्षम होते हैं।

लिंग आयामों को एकीकृत करना: लिंग एक क्रॉस–कटिंग है और गतिविधियों को लिंग लेंस के साथ देखा जाता है। महिला सामूहिकों को लिंग और पितृसत्ता पर प्रशिक्षित किया जाता है। उनके कैडर महिलाओं को किसान, निर्णय लेने, संसाधनों तक पहुँच और आय पर नियंत्रण के रूप में उन्मुख करते हैं ताकि महिला किसानों के साथ काम करते समय वे इन पहलुओं का ध्यान रख सकें।

परिणाम/प्रभाव

वर्तमान में, हम प्रत्यक्ष और भागीदारी मोड के तहत 22–07 लाख परिवारों के साथ काम कर रहे हैं। हमने जिन पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया, उनमें से एक था परिवारों को पर्याप्त भोजन उपलब्ध कराना

और परिवार की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए नकद आय देना। हमने फसलों की उत्पादकता में सुधार के लिए कैडर–आधारित प्रणाली के माध्यम से किसानों के साथ गहनता से काम किया। धान की पैदावार जो 1–1–5 मीट्रिक टन/हेक्टेयर थी, वह बढ़कर 3–3–5 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर हो गई है, जबकि खुली परिस्थितियों में सब्जियों की उत्पादकता 10–15 मीट्रिक टन/हेक्टेयर हो गई है।

वित्त वर्ष 22–23 के दौरान चयनित परिवारों के साथ किए गए वार्षिक घरेलू आय में, नमूना परिवारों के 33 प्रतिशत ने 60,000–100,000 रुपये के बीच सकल आय की सूचना दी, जबकि 44 प्रतिशत परिवारों ने 100,000–300,000 रुपये के बीच आय की सूचना दी, जिसमें से कृषि का योगदान लगभग 40 प्रतिशत था।

सीख और भावी राह:

जलवायु परिवर्तन, बाजार की बदलती माँग और प्राकृतिक खेती/पुनर्जननशील कृषि के बारे में चर्चा के संदर्भ में हम पुनर्योजी कृषि के तहत उच्च आय वाले मॉडल विकसित करने की कोशिश कर रहे हैं, ऐसे मॉडल विकसित कर रहे हैं जो गांवों में युवाओं को बनाए रखेंगे, ऐसे मॉडल जो फायदेमंद होने के साथ–साथ टिकाऊ भी हों।

हमारे सीखने को संक्षेप में प्रस्तुत करें

1– जिन स्थानों पर हमने एसआरएलएम और अन्य सीएसओ के साथ काम किया, हम कम समय में बड़े पैमाने पर लोगों तक पहुँचने में सक्षम थे।

2– हमने अनुभव किया है कि सामूहिक नेतृत्व वाली योजना ने आजीविका के दायरे में सदस्यों की बड़ी भागीदारी सुनिश्चित की और गुणवत्तापूर्ण कार्यान्वयन में सुधार किया।

3– हम अनुभव कर रहे हैं कि आय उत्पन्न करने के लिए भूमि पर बहुत अधिक दबाव है, जिसके परिणामस्वरूप किसान जितना संभव हो सके अकार्बनिक/सिंथेटिक इनपुट लगाने के लिए मजबूर हैं। यह टिकाऊ नहीं है। हमें भूमि से दबाव को कम करने की आवश्यकता है। यह आजीविका विविधीकरण के माध्यम से किया जा सकता है। कृषि, गैर–कृषि और गैर–कृषि को बढ़ावा देने से न केवल भूमि से दबाव कम होगा बल्कि किसान की आय भी बढ़ेगी। कृषि में भी फसल विविधीकरण की आवश्यकता है। दलहन, तिलहन और नकदी फसलों को जोड़ने की आवश्यकता है और धान जैसे अनाज को कम क्षेत्रों में उगाया जाना चाहि,। हमने अनुभव किया है कि जब परिवार 2–3 आजीविका गतिविधियों को अपनाते हैं, तो वे जल्द ही प्रति वर्ष 1–0 लाख से अधिक की आय प्राप्त कर लेते हैं, जिससे छोटे जोत वाले किसान समृद्ध किसान बन जाते हैं। साथ ही, आजीविका के विविधीकरण से हमें छूटे हुए परिवारों को सम्मिलित करने में सहायता मिली है।

मॉडल:

कृशि आधारित आजीविका के माध्यम से आय वृद्धि मॉडल नीचे दिया गया है।

कृषि आधारित आजीविका में आय वृद्धि) मॉडल के कुछ मॉडल नीचे दिए गगए हैं। किसान उपलब्ध संसाधनों के आधार पर एक ही आजीविका गतिविधि या आजीविका गतिविधियों का मिश्रण कर सकता है।

कृषि आधारित मॉडल	एकड़	संभावित आय (भारतीय राष्ट्रीय रुपये में)
खरीफ सब्जी की खेती जैसे टमाटर	0.30	25,000
संरक्षित खेती के तहत सब्जी की खेती (वार्षिक)	240 वर्ग मीटर	40,000-50,000
ट्रेलिस के तहत सब्जी की खेती	0.20 एकड़	30,000
फूलों की खेती	0.20 एकड़	20,000
दलहन	1 एकड़	30,000
तिलहन	1 एकड़	30,000
आम आधारित अंतरफसल	1 एकड़	1,00,000
बकरी पालन	15 बकरियां (अर्थात् 3–4 मां बकरियां)	30,000
बैकयार्ड पोल्ट्री	40-60 झुंड आकार	30,000
टी ए एस ए आर (रेशम कीट पालन)	2.5 एकड	50,000
मछली पालन	0.15- एकड़ तालाब आकार	20,000-25,000

4– बाजारों से जुड़ने के लिए उत्पादन क्लस्टर की आवश्यकता है। हमने अनुभव किया कि एक उत्पादन क्लस्टर के लिए एक केंद्रित भूगोल (आदर्श रूप से 50–60 किमी के दायरे में) में लगभग 2500–3000 किसानों की आवश्यकता होती है।

5– उत्पादन क्लस्टर को बढ़ावा देते समय, हमें किसानों के लिए मजबूत बाजार पहुँच की आवश्यकता का अनुभव हुआ। एफपीओ किसानों को आगे–पीछे संबंध प्रदान कर रहे हैं। एफपीओ के साथ जुड़ाव के पिछले 3–4 वर्षों में, हमने अनुभव किया है कि व्यक्तिगत ब्लॉक–स्तरीय एफपीओ अलग–थलग रहने में सक्षम नहीं होंगे। उन्हें संगीकृत करने की आवश्यकता है। हम इस मॉडल का प्रदर्शन कर रहे हैं। एफपीओ को भी यह अनुभव हो रहा है कि बिना ब्रांड स्थापना के वे उपज को बड़े पैमाने पर नहीं बेच पाएंगे, इसलिए एफपीओ और उनके समूह ने फार्म टू प्लेट के नाम से एक ब्रांड को बढ़ावा दिया है। एफपीओ को यह भी अनुभव हुआ कि जब उन्होंने अलग–अलग मार्केटिंग चैनलों जैसे मंडी, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, खुदरा विपणन, संस्थागत खरीदार, बी2बी आदि में प्रवेश किया तो उन्हें अधिक बाजार हिस्सेदारी मिली। हम यह भी अनुभव कर रहे हैं कि जब एफपीओ इकोसिस्टम के खिलाड़ी आते हैं, तो एफपीओ का व्यवसाय तेजी से बढ़ता है।

6– बाजार गुणवत्ता, मात्रा, समयबद्धता और मूल्य निर्धारण की माँग करता है, इसलिए हमें इन सभी पहलुओं पर काम करने की आवश्यकता है। आमतौर पर एनजीओ की दुनिया में अन्य माँगों को छोड़कर उत्पादन पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। इससे बाजार में नकारात्मक छवि बनती है।

7– एसआरएलएमए बाजार और सरकार के साथ काम करते हुए हमने अनुभव किया कि सहयोग से हमेशा व्यक्तिगत रूप से अधिक लाभ हुआ है। आजीविका के सार्वभौमिकरण के लिए, इसलिए हमारा ध्यान सरकारी संस्थानों, बाजार के अभिनेताओं, ज्ञान संस्थानों और व्यक्तिगत विशेषज्ञों के साथ सक्रिय रूप से सहयोग करना है ताकि आजीविका को बढ़ाने के लिए उनकी विशेषज्ञता का लाभ उठाया जा सके।

8– जलवायु परिस्थितियों को देखते हुए, छोटे आकार की संरक्षित खेती को बढ़ावा दिया जाता है। यह अच्छा काम कर रहा है। किसान दोगुनी से भी ज्यादा उपज प्राप्त करने में सक्षम हैं। इससे किसानों को आय के लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता मिल रही है। अगला लक्ष्य उत्पादकता और इस प्रकार आय बढ़ाने के लिए हमारे काम में और अधिक तकनीकी हस्तक्षेप लाना है।